



भाकृअनुप-भातिअसं ICAR-IIOR

आईएसओ 9001:2015 प्रमाणित संस्थान / ISO 9001:2015 Certified Institute

समाचार पत्र

NEWSLETTER



खण्ड 26 (1&2), जनवरी-जून 2020

Volume 26 (1&2), January-June 2020

निदेशक की कलम से

प्रिय पाठकों,

मुझे आपके साथ आईसीएआर-आईआईओआर न्यूज़लैटर अंक 26(1 & 2): जनवरी-जून 2020 साझा करने की खुशी है। इस अवधि के दौरान एक महत्वपूर्ण कार्यक्रम “उत्पादकता, लाभ और पोषण सुरक्षा बढ़ाने के लिए तिलहन फसलों में तकनीकी नवाचार” पर “इंडियन सोसायटी ऑफ तिलहन अनुसंधान और आईसीएआर-आईआईओआर, हैदराबाद द्वारा 7-8 फरवरी 2020 के दौरान राष्ट्रीय संगोष्ठी का आयोजन किया गया। डॉ. टी. मोहापाल, सचिव, डेयर और महानिदेशक, आईसीएआर, नई दिल्ली, डॉ. पंजाब सिंह, पूर्व सचिव, डेयर और महानिदेशक, आईसीएआर, नई दिल्ली, डॉ. मंगला राय, पूर्व सचिव, डेयर और महानिदेशक आईसीएआर, नई दिल्ली और डॉ. वी. प्रवीण राव, कुलपति, पीजेटीएसएयु, राजेंद्रनगर, हैदराबाद ने कार्यक्रम की शोभा बढ़ाई। सेमिनार में देश भर से अधिकारियों, वैज्ञानिकों, छात्रों, उद्योग के विशेषज्ञों आदि सहित कुल 477 प्रतिनिधियों ने भाग लिया और विचार-



FROM DIRECTOR'S DESK

Dear Colleagues,

I am glad to share with you the IIOR Newsletter Issue 26(1&2): January-June 2020. A significant event during this period has been organization of National Seminar on “Technological Innovations in Oilseed Crops for Enhancing Productivity, Profitability and Nutritional Security” by Indian Society of Oilseeds Research and ICAR-IIOR, Hyderabad during 7-8 February 2020. The event was graced by Dr. T. Mohapatra, Secretary, DARE and DG, ICAR, New Delhi, Dr. Panjab Singh, former Secretary, DARE and DG, ICAR, New Delhi, Dr. Mangala Rai, former Secretary, DARE and DG, ICAR, New Delhi and Dr. V. Praveen Rao, Vice-Chancellor, PJTSAU, Rajendranagar, Hyderabad. A total of 477 delegates including officials, scientists, students, experts from the industry etc. from across the country attended the seminar and participated in the deliberations. The seminar

विमर्श में भाग लिया। सेमिनार ने सभी हितधारकों को देश में वनस्पति तेल परिदृश्य से संबंधित मुद्दों पर विचार करने के लिए एक मंच प्रदान किया।

दो दिनों के विचार-विमर्श के बाद, आर & डी प्रयासों को बढ़ावा देने और देश में वनस्पति तेल उत्पादन में आत्मनिर्भरता प्राप्त करने के लिए आवश्यक उपयुक्त नीतिगत निर्णयों की सहायता के लिए कई सिफारिशों की गईं। कुछ प्रमुख अनुसंधानों में शामिल हैं: फसल सुधार अनुसंधान को मास्ट, स्पीड ब्रीडिंग, जीनोमिक्स, जीनोम एडिटिंग आदि जैसे नए टूल के एकीकरण द्वारा जर्मप्लाज्म एन्हांसमेंट, प्री-ब्रीडिंग और कल्टीवेर डेवलपमेंट पर फोकस के साथ मजबूत करने की जरूरत है। जलवायु लचीला कल्टीवार के लिए प्रजनन समय की जरूरत है। सूक्ष्म-सिंचाई प्रणालियों के साथ सेंसर प्रौद्योगिकी और आईटी उपकरणों में विकास को एकीकृत करना; कृषि प्रौद्योगिकियों के संरक्षण और क्षमता निर्माण को अपनाना, छोटी जोत वाले किसानों के लिए तिलहन फसलों के लिए संपूर्ण मूल्य श्रृंखला के लिए छोटे उपकरणों और मशीनरी का विकास करना, फसल उत्पादन के प्रमुख क्षेत्रों के रूप में पहचाना गया। तिलहनी फसलों के प्रतिरोध और रोग प्रबंधन के लिए पूर्वानुमान तकनीकों के पूर्वानुमान तंत्र पर मजबूत बुनियादी अनुसंधान की आवश्यकता और फसल सुरक्षा के क्षेत्र में रोग प्रबंधन के पूर्वानुमानों को मान्यता दी गई। प्रसंस्करण, मूल्य संवर्धन, विशेष तेलों और तेल के द्वितीयक स्रोतों के लिए प्रौद्योगिकियों के विकास में तेजी लाने की आवश्यकता है। विभिन्न संस्थानों द्वारा विकसित सभी इंटरैक्टिव मोबाइल ऐप, डीएसएस और अन्य आईसीटी दृष्टिकोण किसानों की प्रथाओं की तुलना में बेहतर प्रौद्योगिकियों के साथ प्राप्य पैदावार के बीच अंतर को पूरा करने के लिए किसानों तक पहुंचना चाहिए। उपज के सुरक्षित भंडारण के लिए विपणन और बुनियादी सुविधाओं की स्थापना की आवश्यकता है और किसानों द्वारा आसान पहुंच की सुविधा प्रदान की जाए, जिसे सार्वजनिक-निजी भागीदारी (पीपीपी) मोड के माध्यम से प्राप्त किया जा सकता है। घरेलू तिलहन उत्पादन को प्रोत्साहित करने के लिए कई नीतिगत हस्तक्षेप जिनमें आयात पर मात्रात्मक प्रतिबंध, जीएम फसलों का उपयोग, मजबूत खरीद प्रणाली आदि शामिल हैं।

तिलहनी फसलों में आर & डी को मजबूत करने की दिशा में एक कदम के रूप में, सरकार और जैव प्रौद्योगिकी विभाग द्वारा कुसुम और रामतिल पर राष्ट्रीय स्तर की नेटवर्क परियोजनाओं को मंजूरी दी गई है। भारत के आईसीएआर-आईआईओआर, हैदराबाद के समन्वयक के रूप में और देश भर में एसएयु और अन्य प्रमुख अनुसंधान संस्थानों के सहयोग से कार्यान्वित किए जाते हैं। कुसुम और रामतिल के आनुवांशिक संसाधनों को समझने और उनका दोहन करने के लिए जैव प्रौद्योगिकी उपकरण और तरीके विकसित करने का लक्ष्य है, जो प्रजनन प्रयासों में तेजी लाने में मदद कर सकता है।

(डॉ. ए. विष्णुवर्धन रेड्डी)

provided a platform for all the stakeholders to deliberate the issues concerning the vegetable oil scenario in the country.

After two days of deliberations, several recommendations were made to boost R&D efforts and assist suitable policy decisions required to achieve self-reliance in vegetable oil production in the country. Some of the key recommendations include: Crop improvement research needs to be strengthened with the focus on germplasm enhancement, pre-breeding and cultivar development by integration of cutting edge tools such as MAS, speed breeding, genomics, genome editing etc. Breeding for climate resilient cultivars is the need of the hour. Integrating the developments in sensor technology and IT tools with micro-irrigation systems; adopting, scaling up and capacity building of conservation agriculture technologies and developing small implements and machinery for complete value chain for oilseed crops for small holding farmers were identified as the key areas for crop production. Need for strong basic research on understanding mechanisms of resistance to pest and diseases of oilseed crops and forecasting technologies for disease management were recognized in the area of crop protection. Development of technologies for processing, value addition, specialty oils and secondary sources of oils need to be expedited. All the interactive mobile apps, DSS and other ICT approaches developed by different institutions must reach farmers for bridging the gap between attainable yields with improved technologies compared to farmers' practices. Marketing and infrastructure facilities need to be established for safe storage of the produce and facilitate easy access by the farmers, which may be achieved through public-private participation (PPP) mode. Several policy interventions including quantitative restrictions on import, use of GM crops, robust procurement systems, etc. were suggested for encouraging domestic oilseed production.

As a step towards strengthening R&D in oilseed crops, national level network projects on safflower and niger have been sanctioned by Department of Biotechnology, Govt. of India with ICAR-IOR, Hyderabad as the coordinator and are implemented in collaboration with SAUs and other premier research institutions across the country. The projects aim to develop biotechnological tools and methods to understand and exploit genetic resources of safflower and niger, which could help accelerating breeding efforts.

(Dr. Vishnuvardhan Reddy)

बैठके / MEETINGS

तिलहन बीज हब पर मध्यावधि समीक्षा बैठक

आईसीएआर-आईआईओआर, हैदराबाद द्वारा समन्वित की जा रही डीएसी & एफडब्ल्यू, नई दिल्ली के तिलहन बीज के हब पर मध्य अवधि समीक्षा बैठक 24 जनवरी 2020 को पश्चिम बंगाल के निम्पिथ, रामकृष्ण आश्रम कृषि विज्ञान केंद्र (आरएकेवीके) में आयोजित की गई। बैठक की अध्यक्षता श्रीमती शोभा ठाकुर, संयुक्त सचिव (तिलहन और फसल), डीएसी & एफडब्ल्यू, भारत सरकार द्वारा की गई। डॉ. अनुपम बारिक, अतिरिक्त आयुक्त (तिलहन), डीएसी & एफडब्ल्यू; डॉ. एस.के. झा, उप-एडीजी (तिलहन और दलहन), आईसीएआर, नई दिल्ली; सह-नोडल अधिकारियों का प्रतिनिधित्व डॉ. टी. राधाकृष्णन, निदेशक, आईसीएआर-डीजीआर, जूनागढ़; डॉ. एस. भाटिया, आईसीएआर-आईआईएसआर, इंदौर; डॉ. भागीरथ राम, प्रधान वैज्ञानिक, आईसीएआर-डीआरएमआर, भरतपुर; डॉ. एस.एन. सुधाकर बाबू, आईसीएआर-आईआईओआर; तिलहन विकास निदेशालय, हैदराबाद के निदेशक और जूट विकास निदेशालय, कोलकाता के गणमान्य व्यक्तियों ने शिरकत की। भाग लेने वाले सभी बीज हब केंद्रों (35) का प्रतिनिधित्व संबंधित प्रभारी अधिकारियों द्वारा किया गया। बीज हब केंद्रों में से एक के अध्यक्ष, स्वामी सदानंदजी महाराज ने बैठक की मेजबानी की।

50 लाख रुपये की लागत से निम्पिथ आरएकेवीके, पश्चिम बंगाल के

बीज प्रसंस्करण संयंत्र और बीज भंडारण गोदाम की बुनियादी सुविधाओं का उद्घाटन श्रीमती शोभा ठाकुर द्वारा किया गया। सभी बीज हब केंद्रों की स्थिति और प्रगति की समीक्षा प्रत्येक सह केंद्र के साथ चर्चा के बाद संबंधित सह-नोडल अधिकारियों की प्रस्तुति के साथ की गई। श्रीमती ठाकुर ने सामान्य रूप से की गई प्रगति और विशेष रूप से निम्पिथ केंद्र की उपलब्धि की सराहना की, लेकिन बीज हब केंद्रों में अपेक्षित समय में सफलता प्राप्त करने के लिए लंबित मुद्दों या बाधाओं की आलोचना की। उन्होंने विभिन्न केंद्रों के सामने आने वाली बाधाओं को दूर करके, एसआरआर और वीआरआर को बढ़ाने के लिए सीड हब को अगले स्तर तक ले जाने के लिए प्राथमिकता पर मुद्दों को हल करने की आवश्यकता पर बल दिया। केंद्रों ने मूंगफली और सोयाबीन के लिए उपज उठाने, मूल्य निर्धारण और सब्सिडी के मुख्य मुद्दे, अपर्याप्त परिक्रामी निधि, सीपीडब्ल्यूडी की उच्च दर, आदि मुद्दे व्यक्त किए गए। डॉ. अनुपम बारिक और डॉ. झा ने मुद्दों को प्राथमिकता पर संबोधित करने के



Mid-term Review Meeting on Oilseeds Seed Hub

Mid-term review meeting on Oilseeds Seed Hub of DAC&FW, New Delhi being coordinated by ICAR – IOR, Hyderabad was held at Ramkrishna Ashram Krishi Vigyan Kendra (RAKVK), Nimpith, West Bengal on 24 January 2020. The meeting was chaired by Smt. Shobha Thakur, Joint Secretary (Oilseeds & Crops), DAC & FW, Govt. of India, Dr. Anupam Barik, Additional Commissioner (Oilseeds), DAC & FW, Dr. S.K. Jha, ADG (Oilseeds & Pulses), ICAR, New Delhi, the co-nodal officers represented by Dr. T. Radhakrishnan, Director, ICAR-DGR, Junagadh; Dr. S. Bhatia, ICAR-IISR, Indore; Dr. Bhagirath Ram, Principal Scientist, ICAR-DRMR, Bharatpur, Dr. S.N. Sudhakara Babu, ICAR-IIOR, Directors of Directorate of Oilseed Development, Hyderabad and Directorate of Jute Development, Kolkata were the dignitaries. All the

participating seed hub centres (35) were represented by the respective officer in-charge. Revered Swami Sadanandji Maharaj, the Chairman of RAKVK, Nimpith, as one of the seed hub centres, hosted the meeting.

The infrastructure facilities of seed processing plant and seed storage godown of RAKVK, Nimpith, West

Bengal built at a cost of Rs.50 lakhs were inaugurated by Smt. Shobha Thakur. Status and progress of all the seed hub centers were reviewed with the presentation of respective co-nodal officers followed by discussion with each seed hub centre. Smt. Thakur appreciated the progress made in general and specifically the achievement of Nimpith centre but was critical of the pending issues or hurdles for achieving the success in the expected timeline across the seed hub centres. She called for the need to resolve the issues on priority for taking the seed hub to next level of expansion towards increasing SRR and VRR, by addressing the hurdles faced by different centres. The main issues of lifting, pricing and subsidy, insufficient revolving fund for groundnut and soybean, higher rates of CPWD, etc were expressed by the centres. Dr. Anupam Barik and Dr. Jha corroborated the remarks to address the issues on priority.

लिए टिप्पणियों को मंजूरी दी। यह स्पष्ट किया गया था कि रबी फसलों और बुनियादी सुविधाओं के पूरा होने के लिए बीज हब परियोजना का कार्यकाल यथोचित बढ़ाया जाएगा।

आईएमसी की बैठक

24 जनवरी, 2020 को हैदराबाद में आयोजित आईसीएआर-आईआईओआर की 43 वीं संस्थान प्रबंधन कमेटी (IMC) की बैठक आईसीएआर-आईआईओआर के निदेशक डॉ. ए. विष्णुवर्धन रेड्डी के वर्ष 2019 के दौरान आईसीएआर-आईआईओआर की रिसर्च हाइलाइट्स और अन्य गतिविधियों की प्रस्तुति से हुई। श्री. शितांशु कुमार, वरिष्ठ प्रशासनिक अधिकारी, आईसीएआर-आईआईओआर और आईएमसी के सदस्य सचिव ने आईएमसी की बैठक का एजेंडा पेश किया जिसमें बजट अनुमान और अब तक का व्यय शामिल था। एजेंडा आइटम के अनुसार, इस संबंध में परिषद के विभाग के दिशानिर्देशों के अनुसार संस्थान के वाहन (टाटा सूमो: एपी 28 9465) को अनुपयोगी घोषित करने के लिए सदस्यों को एक प्रस्ताव भी प्रस्तुत किया गया। सदन ने अध्यक्ष द्वारा प्रस्तुत वैज्ञानिक उपलब्धियों / योगदान की सराहना की और आईसीएआर-आईआईओआर-एकीकृत बजट में अब तक हुए व्यय और एआईसीआरपी सहित आईसीएआर-आईआईओआर की इन-हाउस और बाहरी परियोजनाओं को नोट किया। आईएमसी ने आईसीएआर-आईआईओआर के समय कामकाज के लिए अपनी संतुष्टि व्यक्त की।



अरंडी, सूरजमुखी, तिल और रामतिल की वार्षिक समूह बैठक-2020

आईसीएआर-आईआईओआर, हैदराबाद ने 26-27 मई 2020 तक अरंडी, सूरजमुखी, तिल और रामतिल की वार्षिक समूह बैठक का आयोजन किया। देश में कोविड-19 के प्रकोप के साथ, बैठक का आयोजन एमएचए दिशा-निर्देश के अनुसार, वीडियो कॉन्फ्रेंस के माध्यम से किया गया था। 27 मई 2020 को प्लेनरी सत्र के दौरान, डॉ. त्रिलोचन मोहापात्र, सचिव (डीएआरई) एवं महानिदेशक (आईसीएआर) ने तिलहन के आनुवंशिक सुधार में जीनोमिक्स में उन्नति के लाभों के दोहन की आवश्यकता पर जोर दिया। उन्होंने विभिन्न जैविक और अजैविक तनावों के लिए फीनोटाइपिंग के लिए उपयुक्त एसओपी और सुविधाओं के विकास के महत्व पर प्रकाश डाला और आला क्षेत्रों में एआईसीआरपी वैज्ञानिकों को पर्याप्त प्रशिक्षण प्रदान

It was clarified that the term of the seed hub project would be reasonably extended for aiding completion of *rabi* crops and infrastructure facilities.

IMC Meeting

The 43rd Institute Management Committing (IMC) meeting of ICAR-IIOR held at Hyderabad on 24 January, 2020. Dr. A. Vishnuvardhan Reddy, Director, ICAR-IIOR and Chairman of IMC presented the Research Highlights and other extension activities of ICAR-IIOR during the year 2019 to the house. Shri Shitanshu Kumar, Sr. Administrative Officer, ICAR-IIOR and Member Secretary of IMC presented the agenda of IMC meeting including the budget estimates and expenditure incurred till date. As per the agenda item, a proposal was also submitted to the members for recommendation for condemnation of the vehicle of the institute (Tata Sumo: AP 28 9465) according to guidelines of Department of Expenditure and endorsed by the Council in this regard. The house appreciated the scientific achievements/contributions as presented by the chairman and noted the expenditure incurred so far in ICAR-IIOR- Unified Budget including the AICRP and also ongoing in-house and external projects of ICAR-IIOR. The IMC expressed their satisfaction for overall functioning of ICAR-IIOR.

Annual Group Meeting of Castor, Sunflower, Sesame & Niger-2020

ICAR-IIOR, Hyderabad organized the Annual Group Meeting of Castor, Sunflower, Sesame & Niger from 26-27 May 2020. With the outbreak of the COVID-19 in the country, the meeting was organized through Video Conference, in accordance with the MHA Guidelines. During the Plenary Session on 27 May 27 2020, Dr. Trilochan Mohapatra, Secretary (DARE) & Director General (ICAR) emphasized the need for harnessing the benefits of advancement in genomics in genetic improvement of oilseeds. He highlighted the importance of developing appropriate SOPs and facilities for phenotyping for various biotic and abiotic stresses and provide adequate training to AICRP scientists

करने पर जोर दिया। उद्घाटन संबोधन में, आईसीएआर के उप महानिदेशक (फसल विज्ञान) डॉ. तिलक राज शर्मा ने तिलहनी फसलों की महत्वपूर्ण उपज बढ़ाने और गुणवत्ता में सुधार लाने के लिए पूर्व प्रजनन, गति प्रजनन और एलील खनन उपकरण और तकनीकों के व्यापक उपयोग की आवश्यकता पर जोर दिया। डॉ. डी.के. यादव, एडीजी (सीड्स), आईसीएआर ने नई जारी कल्टीवार के साथ पुरानी किस्मों को बदलने की आवश्यकता पर प्रकाश डाला। डॉ. एस. के. झा, एडीजी (ओ&पी) ने वैज्ञानिकों से आग्रह किया कि वे तिलहन क्षेत्र के विस्तार के लिए एफएलडी में अंतराल को संबोधित करें। डॉ. पी. राघव रेड्डी, कुलपति (सेवानिवृत्त), एएनजीआरएयू, हैदराबाद ने उपज के लिए उच्च लक्ष्य निर्धारित करने और जैविक और अजैविक तनाव और उत्पादन में स्थिरता के लिए बढ़ी हुई सहिष्णुता के लिए उपलब्ध जर्मप्लाज्म का उपयोग करने की आवश्यकता पर जोर दिया। डॉ. एम.के. नाइक, उप-कुलपति, कृषि और बागवानी विज्ञान विश्वविद्यालय, शिवमोग्गा ने प्रत्येक रोग के लिए एक हॉट स्पॉट क्षेत्र की पहचान करने और प्रजनन कार्यक्रमों में शोषण के लिए प्रतिरोधी लाइनों की पहचान करने के लिए स्क्रीनिंग ट्रायल आयोजित करने का सुझाव दिया। डॉ. पी.के. चक्रवर्ती, सदस्य, एएसआरबी ने कहा कि पराग प्रबंधन रणनीतियों को विकसित करते समय परागणकों के संरक्षण और तैनाती के दृष्टिकोण पर विचार

किया जाना चाहिए। डॉ. डी.एम. हेगडे, पूर्व निदेशक, आईसीएआर-आईआईओआर; डॉ. वाई.जी. प्रसाद, निदेशक, अटारी, हैदराबाद; डॉ. जी. रवींद्र चेरी, निदेशक, क्रिडा; डॉ. टी. राधाकृष्णन, निदेशक, डीजीआर-जूनागढ़; डॉ. एम. कृष्णा रेड्डी, पीएस, आईआईएचआर, बेंगलुरु; डॉ. महेंद्र कुमार, पीएस, आईसीएआर-आईआईओआर, हैदराबाद; डॉ. एम. रामचंद्रम, पीएस (सेवानिवृत्त), आईसीएआर-आईआईओआर ने समूह की बैठक के विभिन्न सत्रों के लिए अध्यक्ष/विषय विशेषज्ञ के रूप में काम किया और 2020-21 के लिए मजबूत तकनीकी कार्यक्रम तैयार करने में मदद की। रबी-ग्रीष्मकालीन 2018-19 और खरीफ-2019 के दौरान किए गए प्रयोगों और एफएलडी के परिणाम संबंधित फसल पीआई और सह-पीआई द्वारा प्रस्तुत किए गए थे। डॉ. ए. विष्णुवर्धन रेड्डी, निदेशक, आईसीएआर-आईआईओआर और डॉ. रजनी बिसेन, आई/सी परियोजना समन्वय इकाई (तिल और रामतिल) ने चार खरीफ तिलहन फसलों की उपलब्धियों को प्रस्तुत किया। समूह की बैठक में कुल 224 प्रतिनिधियों ने भाग लिया।



in the niche areas. In the inaugural address, Dr. Tilak Raj Sharma, Deputy Director General (Crop Science), ICAR, stressed the need for extensive utilization of pre-breeding, speed breeding and allele mining tools and techniques for bringing out significant yield enhancement and quality improvement in oilseed crops. Dr. D.K. Yadava, ADG (Seeds), ICAR highlighted the need to replace old varieties with the newly released cultivars. Dr. S.K. Jha, ADG (O&P) urged the scientists to address the gaps in FLDs for expansion of the area under oilseeds. Dr. P. Raghava Reddy, Vice-Chancellor (Retd.), ANGRAU, Hyderabad emphasized the need to set higher targets for yield and utilize the germplasm available for enhanced tolerance to biotic and abiotic stresses and sustainability in production. Dr. M.K. Naik, Vice-Chancellor, University of Agricultural & Horticultural Sciences, Shivamogga suggested identifying one hot spot area for each of the diseases and conducting the screening trials to identify resistant lines for exploitation in the breeding programmes. Dr. P.K. Chakrabarty, Member, ASRB opined that the approaches for conservation and

deployment of pollinators should be considered while developing pest management strategies. Dr. D.M. Hedge, Former Director, ICAR-IIOR; Dr. Y.G. Prasad, Director, ATARI, Hyderabad; Dr. G. Ravindra Chary, Director, CRIDA; Dr. T. Radhakrishnan, Director, DGR-Junagadh; Dr. M. Krishna Reddy, PSIHR, Bengaluru; Dr. Mahendra Kumar, PS, ICAR-IIRR, Hyderabad; Dr. M. Ramachandram, PS (Retd.), ICAR-IIOR acted as Chairmen/ Subject experts for different sessions of the group meeting and helped in formulating a sound technical programme for 2020-21. The results of the experiments and FLDs conducted during *rabi*-Summer 2018-19 and *kharif*-2019 were presented by the respective crop PIs and Co-PIs. Dr. A. Vishnuvardhan Reddy, Director, ICAR-IIOR and Dr. Rajani Bisen, I/c Project Coordinating Unit (Sesame & Niger) presented the achievements of four *kharif* oilseed crops. A total of 224 delegates participated in the group meeting.

आयोजन / EVENTS

नव वर्ष 2020 समारोह

आईसीएआर-आईआईओआर रिक्रिएशन क्लब द्वारा 01 जनवरी, 2020 को नववर्ष 2020 समारोह का आयोजन किया गया था। निदेशक ने इस अवसर पर स्टाफ के सदस्यों को संदेश दिया कि आईसीएआर-आईआईओआर ने तिलहन किसानों की सेवा में सराहनीय उपलब्धियां हासिल की हैं और समर्पित प्रयासों के साथ यह आगे भी जारी रहेगा। इस अवसर को यादगार बनाने के लिए मनोरंजक गतिविधियों का आयोजन भी किया गया।



New Year 2020 Celebrations

New Year 2020 celebration was organized by ICAR-IIOR Recreation Club on 01 January, 2020. The Director wished the staff members on this occasion with the message that ICAR-IIOR has made commendable achievements in the service of oilseed farmers and would continue to march-ahead in this endeavour with the dedicated efforts. Entertainment activities were conducted to mark the occasion.



गणतंत्र दिवस समारोह

आईसीएआर-आईआईओआर ने 26 जनवरी, 2020 को भारत का 71 वां गणतंत्र दिवस मनाया। सभी स्टाफ सदस्यों ने अपने परिवार के सदस्यों के साथ समारोह में भाग लिया। आईसीएआर-आईआईओआर के निदेशक डॉ. ए. विष्णुवर्धन रेड्डी ने राजेंद्रनगर और नारखोडा फार्म परिसरों में राष्ट्रीय ध्वज फहराया। खेलों सहित कई मनोरंजक कार्यक्रमों की व्यवस्था की गई, जिसमें कर्मचारियों के सदस्यों और बच्चों ने सक्रिय रूप से भाग लिया।

Republic Day Celebrations

ICAR-IIOR celebrated 71st Republic Day of India on 26 January, 2020. All the staff members participated in the celebrations along with their family members. Dr. A. Vishnuvardhan Reddy, Director, ICAR-IIOR hoisted the national flag at Rajendranagar and Narkhoda farm campuses. Several recreational events including sports were arranged, wherein the staff members and the children actively participated.



‘उत्पादकता, लाभप्रदता और पोषण सुरक्षा बढ़ाने के लिए तिलहन फसलों में तकनीकी नवाचार पर राष्ट्रीय संगोष्ठी’

इंडियन सोसाइटी ऑफ तिलहन रिसर्च के तत्वावधान में 7-8 फरवरी, 2020 के दौरान हैदराबाद में “उत्पादकता, लाभप्रदता और पोषण सुरक्षा के लिए तिलहन फसलों में तकनीकी नवाचार” पर राष्ट्रीय संगोष्ठी का आयोजन किया गया था। वैज्ञानिक, विस्तार, उद्योग और विकासआत्मक एजेंसियों का प्रतिनिधित्व करने वाले कुल 477 प्रतिनिधियों ने भाग लिया। डॉ. तिलोचन मोहापात्र, सचिव, डेयर और महानिदेशक, आईसीएआर, नई दिल्ली और अध्यक्ष, आईएसओआर ने सेमिनार का उद्घाटन किया। अपने उद्घाटन भाषण में, डॉ. मोहापात्र ने प्रतिभागियों को ग्रेडबेयर पर चर्चा करने के लिए आमंत्रित किया, जो कि आयात को कम करने के लिए तिलहन और वनस्पति तेलों के सभी पहलुओं से संबंधित मुद्दे थे। उन्होंने जीनोम एडिटिंग, स्पीड ब्रीडिंग, मार्कर असिस्टेड ब्रीडिंग जैसी आधुनिक प्रजनन तकनीकों को अपनाने की आवश्यकता पर जोर दिया और साथ ही अरंडी जैसी फसलों में मूल्य संवर्धन के लिए अनुसंधान के प्रयासों को जारी रखने के लिए बेहतर आउट-एक्ट गतिविधियों के साथ लैब से खेत अंतर को कम किया; और तिलहनी फसलों में आंतरिक उपज बाधाओं को तोड़ने के लिए बीज से उद्योग तक उच्च मूल्य श्रृंखला। डॉ. ए. विष्णुवर्धन रेड्डी, निदेशक, आईसीएआर-आईआईओआर, हैदराबाद और आईएसओआर के उपाध्यक्ष, ने देश में वनस्पति तेलों की स्थिति और पृष्ठभूमि प्रदान की। डॉ. वी. प्रवीण राव, कुलपति, पीजेटीएसएयू, राजेंद्रनगर, हैदराबाद, डॉ. मंगला राय, पूर्व सचिव, डेयर और महानिदेशक, आईसीएआर और डॉ. पंजाब सिंह, पूर्व सचिव, डेयर और महानिदेशक सम्मान के अतिथि थे।

दो दिवसीय संगोष्ठी के दौरान, सात विषयों जैसे त्वरित प्रजनन, और आनुवंशिक सुधार के माध्यम से फसल की पैदावार को बढ़ाना, संरक्षण खेती और उत्पादन प्रणालियों में संसाधन उपयोग दक्षता बढ़ाने, तनाव प्रबंधन और जलवायु परिवर्तन; प्रसंस्करण, मूल्य संवर्धन, विशेष तेल और तेल के द्वितीयक स्रोतों; किसानों और उपभोक्ताओं तक पहुंचने के लिए ज्ञान प्रबंधन और प्रौद्योगिकी हस्तांतरण; विपणन, नीति समर्थन और उपभोक्ता जागरूकता; और एग्री-इनोवेशन और उद्यमिता के अवसर आदि के माध्यम से फसल की पैदावार बढ़ाने पर गहन विचार-विमर्श किया गया। इस प्रकार, उत्पादकता वृद्धि, फसल प्रबंधन, प्रसंस्करण, मूल्य संवर्धन, बाजार श्रृंखला और पूर्ण मूल्य श्रृंखला के सभी पहलुओं पर चर्चा की गई। प्रत्येक सत्र में, संबंधित क्षेत्रों के अग्रदूतों द्वारा प्रमुख नोट, और प्रत्येक डोमेन में विशेषज्ञों द्वारा लेक्चर का नेतृत्व किया गया था जिसमें हाल के घटनाक्रमों के साथ-साथ उन मुद्दों और चुनौतियों को भी चिह्नित किया गया था जिन्हें संबोधित करने की आवश्यकता है। संगोष्ठी से अनुसंधान, विस्तार और ज्ञान प्रबंधन और नीति के क्षेत्र में कई सिफारिशें आईं। कुछ प्रमुख सिफारिशों में शामिल हैं:

- फसल सुधार अनुसंधान के लिए जर्मप्लाज्म एन्हांसमेंट, प्री-ब्रीडिंग, जीन डिस्कवरी जैसे आधुनिक उपकरणों के अनुप्रयोग जैसे कि स्पीड

National Seminar on “Technological Innovations in Oilseed Crops for Enhancing Productivity, Profitability and Nutritional Security”

National seminar on “Technological Innovations in Oilseed Crops for Enhanced Productivity, Profitability and Nutritional Security” (NOS-2020) was organized at Hyderabad during 7-8 February 2020 under the aegis of Indian Society of Oilseeds Research. A total of 477 delegates representing scientific, extension, industry and developmental agencies attended. Dr. Trilochan Mohapatra, Secretary, DARE and Director General, ICAR, New Delhi and President, ISOR inaugurated the seminar. In his inaugural address, Dr. Mohapatra invited the participants to discuss threadbare, the issues concerning all aspects of oilseeds and vegetable oils to curtail the imports. He emphasized on the need to adopt modern breeding techniques such as genome editing, speed breeding, marker assisted breeding and also to continue the research efforts for value addition in crops like castor, reducing gap from lab to land with better out-reach activities; and higher value chain from seed to industry etc. to break the intrinsic yield barriers in oilseed crops. Dr. A. Vishnuvardhan Reddy, Director, ICAR-IIOR, Hyderabad and Vice-President, ISOR, provided the status and background of vegetable oils in the country. Dr. V. Praveen Rao, Vice-Chancellor, PJTSAU, Rajendranagar, Hyderabad, Dr. Mangala Rai, Former Secretary, DARE & DG, ICAR and Dr. Panjab Singh, Former Secretary, DARE & DG were the guests of honour.

During the two day seminar, in-depth discussions were held under seven themes *viz* Accelerated breeding and boosting crop yields through genetic improvement, Conservation agriculture and enhancing resource use efficiency in production systems, Stress management and climate change; Processing, value addition, specialty oils and secondary sources of oil; Knowledge management and technology transfer for reaching farmers and consumers; Marketing, Policy support and Consumer awareness; and Agri-Innovation and entrepreneurship opportunities. Thus, all aspects of productivity enhancement, crop management, processing, value addition, market chain, and the complete value chain were discussed. In each of the sessions, there were key note addresses by pioneers in the respective areas, and lead lectures by the experts in each of the domains that flagged the recent developments as well as the issues and challenges that need to be addressed. The seminar came up with several recommendations in the area of research, extension and knowledge management and policy. Some of the key recommendations include:

- Crop improvement research needs to focus on germplasm enhancement, pre-breeding, gene discovery with the

ब्रीडिंग, जीनोमिक्स, जीनोम एडिटिंग आदि पर ध्यान देने की जरूरत है। जलवायु लचीलापन के लिए प्रजनन में फिनोमिक्स और रिमोट-सेंसिंग प्लेटफॉर्म को अपनाने के लिए तेज करने और बड़े पैमाने पर स्क्रीनिंग की आवश्यकता है।

- सूक्ष्म-सिंचाई प्रणाली के साथ सेंसर प्रौद्योगिकी और आईटी उपकरणों का एकीकरण, संरक्षण कृषि प्रौद्योगिकियों को मजबूत करना और छोटे किसानों के लिए उपयुक्त छोटे औजार और मशीनरी विकसित करना, फसल उत्पादन अनुसंधान में महत्वपूर्ण क्षेत्र हैं।
- कीटों और रोगों के प्रतिरोध तंत्र के निस्तारण पर बुनियादी शोध को तेज करने की आवश्यकता है। वायरलेस सेंसर नेटवर्क (डब्ल्यूएसएन) और निर्णय समर्थन प्रणाली (डीएसएस) को रोगों के प्रबंधन के लिए तैनात किया जा सकता है।
- प्रसंस्करण के मूल्य, मूल्य संवर्धन, विशेष प्रकार के तेल और द्वितीयक तेल स्रोतों पर प्रमुख ध्यान देने की आवश्यकता है। उदाहरण के लिए, आंयल पाम में उपज वृद्धि, विर्जिन नारियल तेल का प्रचार, जैतून की खेती के लिए उपयुक्त क्षेत्रों की पारिस्थितिक मानचित्रण, सोयाबीन के विशेष उत्पादों के लिए प्रौद्योगिकी लाइसेंस, बायोएथेनॉल उत्पादन आदि जहां कहीं भी संभव हो, सार्वजनिक निजी भागीदारी के माध्यम से उठाए जाने की आवश्यकता है।
- सभी विकसित इंटरैक्टिव मोबाइल ऐप, डीएसएस और अन्य आईसीटी दृष्टिकोण किसानों की प्रथाओं की तुलना में बेहतर प्रौद्योगिकियों के साथ प्राप्य पैदावार के बीच अंतर को पाटने के लिए किसानों तक पहुंचना चाहिए।
- घरेलू वनस्पति तेल उत्पादन को बढ़ावा देने के लिए आनुवांशिक रूप से संशोधित (जीएम) फसलों को अपनाने के लिए नीति समर्थन, खाद्य तेल के आयात पर मालात्मक प्रतिबंध लगाना, बाजार की खुफिया जानकारी के माध्यम से मूल्य निर्धारण आदि की आवश्यकता है।

सत्र का समापन डॉ. एम. सुजाता आईएसओआर के महा सचिव और प्रधान वैज्ञानिक, आईसीएआर-आईआईओआर, हैदराबाद के धन्यवाद प्रस्ताव के साथ हुआ।



application of modern tools such as speed breeding, genomics, genome editing etc. Breeding for climate resilience need to be expedited by adopting phenomics and remote-sensing platforms for large-scale screening.

- Integration of sensor technology and IT tools with micro-irrigation system, strengthening conservation agriculture technologies and developing small implements and machinery suitable for smallholder oilseed farmers are key areas of attention in crop production research.
- Basic research on deciphering mechanisms resistance to pests and diseases need to be intensified. Wireless sensor networks (WSN) and decision support system (DSS) may be deployed for management of diseases.
- Avenues of processing, value addition, specialty oil types and secondary oil sources need major attention. For example, yield enhancement in oil palm, promotion of virgin coconut oil, ecological mapping of suitable areas for olive cultivation, technology licensing for speciality products of soybean, bioethanol production etc. need to be taken up through public private partnership, wherever possible.
- All the developed interactive mobile apps, DSS and other ICT approaches must reach farmers for bridging the gap between attainable yields with improved technologies compared to farmers' practices.
- Policy support for adoption of Genetically Modified (GM) crops, imposing quantitative restrictions on import of edible oil, price tracking through market intelligence etc. are needed for promoting domestic vegetable oil production.

The session ended with vote of thanks by Dr. M. Sujatha, General Secretary, ISOR and Principal Scientist, ICAR-IIOR, Hyderabad.



अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस समारोह

संयुक्त राष्ट्र थीम "मैं पीढ़ी समानता: महिलाओं के अधिकारों को महसूस कर रही हूँ" के तहत 09 मार्च 2020 को आईसीएआर-आईआईओआर, हैदराबाद में अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस मनाया गया। सत्र की अध्यक्षता आईसीएआर-आईआईओआर के निदेशक डॉ. ए. विष्णुवर्धन रेड्डी ने की। मुख्य अतिथि, श्रीमती राधिका रस्तोगी, आईएएस, डीडीजी, एनआईआरडी और पीआर ने महिला विकास के लिए समाज में मौजूद भेदभाव और अदृश्य बाधाओं पर कर्मचारियों को संबोधित किया। उन्होंने कहा कि आकांक्षाएं पुरुषों और महिलाओं के लिए समान हैं लेकिन सामाजिक मानदंडों द्वारा कंडीशनिंग के कारण, महिलाएं अपनी महत्वाकांक्षाओं पर समझौता करने के लिए मजबूर हैं। उन्होंने दोहराया कि कुशलता से अपनी जिम्मेदारियों को पूरा करने में मदद करने के लिए महिला को बुनियादी सुविधाएं प्रदान की जानी चाहिए। महिलाओं को यह भी पता होना चाहिए कि उनके पास न केवल अधिकार हैं, बल्कि जिम्मेदारियां भी हैं। उन्हें कुछ प्राथमिकताएं बनानी चाहिए और उन्हें पूरी क्षमता के साथ महसूस करना चाहिए। उन्होंने कहा कि बच्चों के मन में समानता का समावेश होना चाहिए और यह मूल रूप से तब होता है जब घर में लिंग समानता को सिखाया जाता है जैसा कि बच्चे देख कर सीखते हैं। उन्होंने कहा कि यह निकट भविष्य में लिंग समान समाज को साकार करने में एक लंबा रास्ता तय करेगा। उन्होंने आग्रह किया कि हम सभी को पीड़ित के लिए बोलना चाहिए और खड़े होना चाहिए। उन्होंने जोर देकर कहा कि विशेषाधिकार प्राप्त लोगों को सचेत रूप से सोचना चाहिए और विशेष रूप से महिलाओं के अधिकारों के बारे में शिक्षित करने के संदर्भ में कम विशेषाधिकार प्राप्त लोगों की मदद करनी चाहिए। उन्होंने कई स्वयं सहायता समूहों, सामाजिक समितियों, गैर सरकारी संगठनों और सरकारी एजेंसियों द्वारा महिला केंद्रित समस्याओं और मुद्दों के समाधान में भूमिका निभाई। डॉ. ए. विष्णुवर्धन रेड्डी ने कार्य स्थल पर भी लैंगिक समानता की आवश्यकता पर जोर दिया। उन्होंने वैज्ञानिकों से एमजीएमजी गांवों में महिला केंद्रित मुद्दों पर लोगों को जागरूक करने का अनुरोध किया। बैठक में वैज्ञानिक, प्रशासन, तकनीकी, एसएसएस, टीएसएल, आरएएस, एसआरएफ और छात्रों सहित कुल 100 कर्मचारी शामिल हुए। सत्र का समापन आईसीएआर-आईआईओआर के श्री. शितांशु कुमार, वरिष्ठ प्रशासनिक अधिकारी के धन्यवाद प्रस्ताव के साथ हुआ।



International Women's Day Celebration

At ICAR-IIOR, International Women's day was celebrated on 09 March 2020 under the UN theme: "I am Generation Equality: Realizing Women's Rights". The session was chaired by Dr. A. Vishnuvardhan Reddy, Director, ICAR-IIOR. Chief Guest, Smt. Radhika Rastogi, IAS, DDG, NIRD & PR addressed the staff on discrimination and invisible barriers present in the society for women development. She asserted that aspirations are equal for men and women but due to the conditioning by the societal norms, the women are forced to compromise on their ambitions. She reiterated that basic amenities should be provided to woman to facilitate and help her in fulfilling her responsibilities efficiently. The women also should know that they not only have rights but also the responsibilities. They should make some priorities and realize them with full potential. She commended that the equality is to be inculcated in the minds of the children

and this basically happens if gender equality is taught at home as the children learn by observing. She said that this will go a long way in realizing gender equal society in near future. She urged that all of us should speak and stand up for the victim. She insisted that the privileged people should consciously think and help the less privileged especially in terms of educating on

the rights of women. She also highlighted the role being played by many self-help groups, social committees, NGOs and Government agencies, in addressing women-centric problems and issues. Dr. A. Vishnuvardhan Reddy also emphasized the need of gender equality even at work place. He requested scientists to sensitize people on women-centric issues in MGMG villages. A total of 100 staff including scientific, administration, technical, SSS, TSL, RAs, SRFs and students attended the meeting. The session ended with a vote of thanks by Shri Shitanshu Kumar, SAO, ICAR-IIOR.

प्रशिक्षण / TRAINING

आईसीएआर-कुशल सहायक स्टाफ (एसएसएस) के लिए प्रशिक्षण

आईसीएआर-आईआईओआर ने 26 जनवरी 2020 को आईसीएआर-आईआईओपीआर, पेडवेगी, आईसीएआर-आईआईआरआर और आईसीएआर-आईआईओआर, राजेंद्रनगर से "कुशल सहायक कर्मचारियों (एसएसएस) के लिए एक एक्सपोजर विजिट सह प्रशिक्षण का आयोजन किया। उद्घाटन सत्र की अध्यक्षता डॉ. ए. विष्णुवर्धन रेड्डी, निदेशक आईसीएआर-आईआईओआर ने की। क्षेत्र प्रबंधन में व्यावहारिक अभ्यास

Training for ICAR-Skilled Supporting Staff (SSS)

ICAR-IIOR organized an "Exposure visit cum Training for Skilled Supporting Staff (SSS) from ICAR-IIOPR, Pedavegi, ICAR-IIRR and ICAR-IIOR, Rajendranagar" on 26 February 2020. The inaugural session was chaired by Dr. A. Vishnuvardhan Reddy, Director ICAR-IIOR. Practical exercises in the field management were conducted at Narkhoda farm by Dr. G. Suresh, Principal Scientist

नरकोड़ा फार्म में डॉ. जी. सुरेश, प्रधान वैज्ञानिक (एग्रोनॉमी) द्वारा किए गए। “व्यक्तित्व विकास और प्रेरणा” विषय पर एक व्याख्यान, आईसीएएआर-आईआईओआर के श्री. शितांशु कुमार द्वारा दिया गया। कार्यक्रम से कुल 15 प्रतिभागियों ने लाभ उठाया।

गुणवत्तायुक्त बीज उत्पादन पर प्रशिक्षण

आईसीएएआर-आईआईओआर द्वारा 8 मार्च, 2020 को गुणवत्तायुक्त बीज उत्पादकों के ‘कौशल प्रशिक्षण कार्यक्रम’ के प्रतिभागियों (35) को अरंडी और सूरजमुखी संकर के गुणवत्तायुक्त वाले बीज उत्पादन पर एक प्रशिक्षण आयोजित किया गया था। प्रशिक्षण कार्यक्रम में आंध्र प्रदेश के बानगानपल्ले, यागतिपल्ले और अल्लागड्डा में भागीदारी बीज उत्पादन भूखंडों में थ्योरी और क्षेत्र प्रशिक्षण शामिल थे। बीज उत्पादन तकनीक के विभिन्न पहलुओं सहित पैतृको के पौधा रूपात्मक चरित्र, परागण तंत्र, अलगाव दूरी, पंक्ति अनुपात, रोगिंग की पहचान और रॉगिंग शेड्यूल, बीज और फसल मानकों, सूरजमुखी के लिए नर और मादा पैतृको के हस्त परागण की ब्लॉक विधि को समझाया गया। डॉ. एस.एन. सुधाकर बाबू, प्रमुख, सीड सेक्शन, आईसीएएआर-आईआईओआर, हैदराबाद संसाधन व्यक्ति थे। किसानों के साथ एपीएसएससीए के अधिकारियों ने भाग लिया। केवीके के संपर्क वैज्ञानिक डॉ. एम. सुधाकर ने भाग लिया और कार्यक्रम को सुविधाजनक बनाया।



(Agronomy). A lecture on “Personality Development and Motivation” was delivered by Shri Shitanshu Kumar, SAO, ICAR-IOR. A total of 15 participants benefitted from the programme.

Training on Quality Seed Production

A training on quality seed production of castor and sunflower hybrids was organized by ICAR-IOR on 8 March, 2020 to the participants (35 numbers) of ‘Skill training programme of Quality Seed Grower’. The training programme covered theory and field training in the participatory seed production plots at Banaganapalle, Yagantipalle and Allagadda of Andhra Pradesh. Various aspects of seed production technology including plant morphological characters of parents, pollination mechanism, isolation distance, row ratios, rouges identification and rouging schedules, seed and crop standards, block method of planting male and female parents hand pollination for sunflower were explained. Dr. S.N. Sudhakara Babu, Head, Seed Section, ICAR-IOR, Hyderabad was the resource person. Officers of APSSCA participated along with farmers. Dr. M. Sudhakar, the liaison scientist of KVK participated and facilitated the programme.

फील्ड दिवस / FIELD DAYS

कुसुम में प्रमाणित बीज उत्पादन पर फील्ड दिवस

आईसीएएआर-आईआईओआर, हैदराबाद कुसुम को पुनर्जीवित करने के लिए प्रयासरत है क्योंकि बरसात के मौसम के बाद तेलंगाना क्षेत्र में फसल प्रणाली का विविधीकरण के लिए एक आशाजनक तिलहन फसल है। इस दिशा में, एआईसीआरपी (कुसुम), एग्रीकल्चरल रिसर्च स्टेशन, पीजेटीएसएयु, ताण्डूर के सहयोग से आईसीएएआर-आईआईओआर ने 17 फरवरी 2020 को तेलंगाना के खानपुर लिंगमपल्ली गांव (ताण्डूर के पास), पेद्देमुल मंडल, ताण्डूर डिवीजन, विकाराबाद जिले में ‘कुसुम फील्ड दिवस’ का आयोजन किया। श्री पटेल राम रेड्डी के फील्ड में आईएसएफ-764 के प्रमाणित बीज उत्पादन भूखंड में फील्ड दिवस का आयोजन किया गया था, जिसने फील्ड में कुसुम की खेती को पुनर्जीवित करने की क्षमता के बारे में

Field Day on Safflower Certified Seed Production

ICAR-IOR, Hyderabad is striving to revive safflower as one of the promising oilseed crop for post rainy season and diversification of cropping system in Telangana region. Towards this direction, ICAR-IOR in collaboration with AICRP (Safflower), Agricultural Research Station, PJTSAU, Tandur organized a ‘Safflower Field Day’ on 17 February 2020 at Khanapur Lingampally village (near Tandur), Peddemul mandal, Tandur division, Vikarabad district, Telangana. The field day was organized in the certified seed production plot of ISF-764 in Shri Patel Ram Reddy’s field that provided a platform for interaction with scientists, officers and agriculture department officials

वैज्ञानिकों, अधिकारियों और कृषि विभाग के अधिकारियों के साथ बातचीत के लिए एक मंच प्रदान किया।

डॉ. सीएच. वी. दुर्गा रानी, प्रमुख वैज्ञानिक (तिलहन), पीजेटीएसएयू, आरएआरएस, पालम; डॉ. मनोहरन, निदेशक, डीओडी, हैदराबाद; श्री सीताराम, एम/डी ग्रामीण माल श्री संतोष, एम/एम मैरिको उद्योग; कृषि अधिकारी; स्थानीय ग्राम सरपंच, आईसीएआर-आईआईओआर और एआरएस, ताण्डूर, आदि के वैज्ञानिकों और अधिकारियों ने भाग लिया। स्थानीय कुसुम किसानों के अलावा, पड़ोसी गुलबर्गा जिले (चिंचोली) के किसानों ने भी भाग लिया और बातचीत की। किसानों और ग्राम पंचायतों के स्थानीय नेताओं, प्रेस और मीडिया ने भी भाग लिया। क्षेत्र दिवस में कुल 160 किसानों और अधिकारियों ने भाग लिया।



सभी प्रतिष्ठित वक्ताओं ने राज्य में कुसुम की खेती, उत्पादकता और लाभप्रदता में गिरावट के रझानों को संदर्भित किया और कुसुम को उगाने के लिए विभिन्न शक्तियों और अवसरों को जो कि वर्षा, मिट्टी, चना और ज्वार जैसी प्रतिस्पर्धी फसलों के जोखिमों को देखते हुए सबसे व्यवहार्य और लाभदायक फसल के रूप में विकसित होने के अवसर थे। उच्च गुणवत्ता वाले तेल और खली की मांग और तेल निष्कर्षण, एग्रीगेटर आदि के लिए बढ़ते उद्यमी, फसल को लाभदायक बना सकते हैं। वैज्ञानिकों ने व्यक्तिगत रूप से उपयुक्त किस्मों, हाइब्रिड और उच्च ओलीक किस्म के कुसुम, कीट और रोग प्रबंधन, फसल उत्पादन प्रौद्योगिकियों, इंटरक्रॉपिंग सिस्टम, बाजार के अवसरों, आदि की उपलब्धता के बारे में बताया। वीआरआर और बीज प्रतिपादन दर को बढ़ाने के लिए तिलहन बीज केंद्र के माध्यम से भारत सरकार के समर्थन पर प्रकाश डाला गया। एआरएस, ताण्डूर में उच्च दबाव वाले ठंडे तेल निकाले गए तेल का नमूना, उच्च बाजार दर और मूल्य श्रृंखला का प्रदर्शन किया गया। मेजबान किसान और अन्य किसानों ने कुसुम की खेती और कुसुम तेल की खपत और स्वास्थ्य लाभ के साथ अपने अनुभव सुनाए। तेलुगु भाषा में कुसुम की खेती की प्रथाओं के पैकेज पर एक पुस्तिका किसानों को वितरित की गई। कार्यक्रम को आईसीएआर-आईआईओआर, हैदराबाद द्वारा प्रायोजित किया गया था।

कुसुम जर्मप्लाज्म एवं प्रजनक दिवस

कुसुम जर्मप्लाज्म एवं प्रजनक दिवस का आयोजन 25 फरवरी 2020 को आईआईओआर-इक्रीसैट फार्म में किया गया। एआईसीआरपी (कुसुम) केंद्रों के सात प्रजनकों ने कार्यक्रम में भाग लिया और मूल्यांकन के तहत यूएसडीए से प्राप्त नए परिवर्तन, विशेषता विशिष्ट जर्मप्लाज्म

regarding the potential for revival of safflower cultivation in the region.

Dr. Ch. V. Durga Rani, Principal Scientist (Oilseeds), PJTSAU, RARS, Palem; Dr. Manoharan, Director, DOD, Hyderabad; Shri Seetaram, M/D GrameenMall; Shri Santosh, M/s Marico industries; Agricultural officers; local village sarpanch, Scientists and officers from IIOR and ARS, Tandur, etc. participated. Apart from the local safflower farmers, farmers from the neighbouring Gulbarga district (Chincholi) also participated and interacted. Local leaders of farmers and village panchayats, press and media also participated. A total of 160 farmers and officers attended the field day.

All the distinguished speakers referred the declining trends in safflower cultivation, productivity and profitability in the state and delineated various strengths and opportunities for growing safflower as most viable and profitable crop considering the conditions of rainfall, soil, risks of competing crops like chickpea and sorghum. The demand for high quality oil and the cake and the growing entrepreneurs for oil extraction, aggregators, etc. can make the crop profitable. Scientists individually explained the availability of promising suitable varieties, hybrid and high oleic variety of safflower, pest and disease management, crop production technologies, intercropping systems, market opportunities, etc. The support of Govt. of India through oilseeds seed hub for increasing VRR and SRR was highlighted. The sample of cold pressed extracted oil at ARS, Tandur, the high market rates and value chain were demonstrated. The host farmer and other farmers narrated their experiences with safflower cultivation and health benefits of safflower oil consumption and profitability. A pamphlet on package of practices of cultivation of safflower in Telugu language was distributed to the farmers. The programme was sponsored by ICAR-IIOR, Hyderabad.

Safflower Germplasm-cum-Breeders day

The Safflower Germplasm-cum-Breeders Field Day was organized on 25 February 2020 at IIOR-ICRISAT Farm. Seven breeders from AICRP (Safflower) centres attended the programme and observed the variability among the

और अन्य आशाजनक उपयोगों के बीच परिवर्तनशीलता का अवलोकन किया। प्रतिभागियों ने प्रजनन में उपयोग के लिए प्रविष्टियों का चयन किया। प्रतिभागियों ने विभिन्न पीढ़ियों में पॉप्युलेशन, उन्नत पीढ़ी प्रजनन लाइनें, संकर और अन्य विशेषता विशिष्ट प्रजनन सामग्री सहित प्रजनन क्षेत्रों का दौरा किया।



fresh accessions from USDA, trait specific germplasm and other promising accessions under evaluation. The participants selected accessions for utilization in breeding. Participants also visited breeding plots including populations, advanced generation breeding lines, hybrids and other trait specific breeding material in different generations.

अनुसंधान के मुख्य अंश / RESEARCH HIGHLIGHTS

डीबीटी-कुसुम और रामतिल पर नेटवर्क प्रोजेक्ट्स की फंडिंग: जैव प्रौद्योगिकी टूल्स के जरिए आनुवंशिक संसाधनों का उपयोग

आर & डी प्रयासों के माध्यम से वनस्पति तेल उत्पादन में आत्मनिर्भरता प्राप्त करना भारत सरकार की सर्वोच्च प्राथमिकताओं में से एक है। आईसीएआर इस प्रयास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता रहा है। तिलहन फसलों पर अनुसंधान का प्राथमिक ध्यान विभिन्न कृषि-पारिस्थितिक स्थितियों के लिए उपयुक्त उच्च उपज देने वाली प्रजातियों को विकसित करने, फसल प्रबंधन के लिए बेहतर प्रौद्योगिकियों और किसानों और अन्य हितधारकों को प्रौद्योगिकियों के प्रसार की सुविधा के माध्यम से उत्पादकता बढ़ाने पर है। महत्वपूर्ण प्रयासों के बावजूद, देश में तिलहन फसलों की उत्पादकता और उत्पादन कम बना हुआ है, जो एक गंभीर चिंता का विषय है। अत्याधुनिक तकनीकों के माध्यम से समृद्ध आनुवंशिक संसाधनों के लाभों का दोहन करने के लिए तिलहनी फसलों पर आर & डी में एक नए प्रोत्साहन की आवश्यकता है, जो अंततः उत्पादकता में सुधार लाएगा। आईसीएआर और डीबीटी, भारत सरकार ने राष्ट्रीय स्तर पर मिशन मोड नेटवर्क परियोजनाओं के माध्यम से स्वदेशी तिलहनी फसलों-तिल, अलसी, कुसुम और रामतिल के सुधार पर अनुसंधान को बढ़ावा देने के लिए भागीदारी की है। कुसुम और रामतिल पर नेटवर्क परियोजनाओं को आईसीएआर-आईआईओआर, हैदराबाद में समन्वित किया जा रहा है।

कुसुम नेटवर्क परियोजना जिसका शीर्षक है “एग्रोनोमिक लक्षणों से जुड़ी क्यूटीएल/जीनों की जीनोमिक्स-सहायक खोज के माध्यम से कुसुम के सुधार के लिए आनुवंशिक विविधता को उजागर करना” उद्देश्य (1) कुसुम जर्मप्लाज्म के आणविक कोर सेट को विकसित करना, (2) एक बड़े पैमाने पर जीनोम प्रदर्शन के लिए क्यूटीएल/जीन की खोज के लिए व्यापक संघ अध्ययन (जीडब्ल्यूएस) प्रमुख एग्रोनोमिक संबंधी लक्षणों के लिए उपज, प्रतिरोध/सहिष्णुता जैविक और अजैविक तनाव सहित, (3) कुसुम और उसके जंगली प्रजातियों के संदर्भ जीनोम अनुक्रम विकसित करना हैं, (4) उच्च

DBT - Funded Network Projects on Safflower and Niger: Harnessing Genetic Resources through Biotechnological Tools

Achieving self-sufficiency in vegetable oil production through R&D efforts is one of the top priorities of Government of India. ICAR continues to play a significant role in this endeavor. Primary focus of research on oilseed crops has been enhancing the productivity through developing high yielding cultivars suitable for varied agro-ecological situations, improved technologies for crop management and facilitating the outreach of technologies to the farmers and other stakeholders. Despite significant efforts, the productivity and production of oilseed crops in the country remain low, which is a serious concern. A new impetus is required in R&D on oilseed crops to harness the benefits of rich genetic resources through cutting-edge technologies, which would eventually lead to improvements in productivity. ICAR and DBT, Govt. of India have partnered to promote research on improvement of indigenous oilseed crops—sesame, linseed, safflower and niger—through mission mode network projects at the national level. The network projects on safflower and niger are being coordinated at ICAR-IIOR, Hyderabad.

The safflower network project entitled “Exploiting genetic diversity for improvement of safflower through genomics-assisted discovery of QTLs/genes associated with agronomic traits” aims to (1) develop molecular core set of safflower germplasm, (2) perform a large-scale genome-wide association study (GWAS) for QTL/gene discovery for key agronomic traits including yield, resistance/tolerance biotic and abiotic stresses, (3) develop reference genome sequences of safflower and its wild relatives, (4) develop high throughput DNA markers and (5) develop pre-breeding materials through wide crosses. The project is

श्रूपट डीएनए मार्कर विकसित करना और (5) विस्तृत क्रॉस के माध्यम से पूर्व प्रजनन सामग्री विकसित करना हैं। परियोजना आईसीएआर-एनबीपीजीआर (नई दिल्ली) सहित पांच राष्ट्रीय संस्थानों; वसंतराव नायक मराठवाड़ा कृषि विद्यापीठ (वीएनएमकेवी), परभणी (महाराष्ट्र) और महात्मा फुले कृषि विद्यापीठ (एमपीकेवी, सोलापुर (महाराष्ट्र) में एआईसीआरपी-कुसुम केंद्रों; दिल्ली विश्वविद्यालय (दिल्ली) और पंजाब कृषि विश्वविद्यालय (पीएयू), लुधियाना (पंजाब) के सहयोग से कार्यान्वित की गई है। कुल रु. 19,59,32,740.00 (रुपए उन्नीस करोड़ उनसठ लाख बत्तीस हजार सात सौ चालीस) पांच साल (2020-2025) की अवधि के लिए स्वीकृत किए गए हैं।



प्रजनन और जैव प्रौद्योगिकी उपकरणों के माध्यम से (*गुइज़ोटिया एबिसिनिका* एलएफ कैस) के सुधार के लिए “जेनेटिक और जीनोमिक संसाधनों का शोषण” नामक रामतिल नेटवर्क परियोजना को (1) प्रमुख एग्रोनोमिक लक्षणों के लिए रामतिल आनुवंशिक संसाधनों के पूर्ण सेट की विशेषता के उद्देश्य से किया गया है। जिसमें ऑटोगैमी, नॉन-शैटरिंग, हाई हार्वेस्ट इंडेक्स गुणो, ऑयल कंटेंट और ऑयल क्वालिटी शामिल हैं, (2) रूपात्मक, एग्रोनोमिक और आणविक डेटा के आधार पर एक कोर सेट विकसित करना, (3) पूर्व प्रजनन के माध्यम से आनुवंशिक वृद्धि, (4) समजात लाइनों का विकास द्विगुणित अगुणित प्रौद्योगिकी का उपयोग करके, और (5) आनुवंशिक और जीनोमिक संसाधनों का विकास। यह परियोजना आईसीएआर-एनबीपीजीआर (नई दिल्ली), पीसी यूनिट (तिल & रामतिल, जबलपुर, मध्यप्रदेश) सहित सात सहयोगी केंद्रों क्षेत्रीय कृषि अनुसंधान केंद्र, इगतपुरी (महाराष्ट्र) रामतिल अनुसंधान स्टेशन (एनआरएस), एनएयू, वानारसी, (गुजरात), क्षेत्रीय कृषि अनुसंधान केंद्र, चिंतपल्ली (आंध्र प्रदेश), विभाग पौधा आणविक जीवविज्ञान और जैव प्रौद्योगिकी, आईजीकेवी, रायपुर, छत्तीसगढ़ और सीपीएमबी, उस्मानिया विश्वविद्यालय, हैदराबाद के सहयोग से कार्यान्वित की गई है। इस परियोजना को रु. 8,48,90,800.00 (रुपए आठ करोड़ अड़तालीस लाख नब्बे हजार आठ सौ केवल) के साथ चार वर्ष (2020-2024) की अवधि के लिए स्वीकृत किया गया है।

(पी. कादिरवेल, एम. सुजाता एवं ए. विष्णुवर्धन रेड्डी)

implemented in collaboration with five national institutions including ICAR-NBPGR (New Delhi); AICRP-Safflower centres at Vasanthrao Naik Marathwada Krishi Vidyapeeth (VNMKV), Parbhani (Maharashtra) and Mahatma Phule Krishi Vidyapeeth (MPKV), Solapur (Maharashtra); University of Delhi (Delhi) and Punjab Agricultural University (PAU), Ludhiana (Punjab). A total of Rs. 19,59,32,740.00 (Rupees Nineteen crore fifty nine lakh thirty two thousand seven hundred and forty only) has been sanctioned for a period of five years (2020-2025).

The niger network project entitled “Exploitation of genetic and genomic resources for improvement of niger (*Guizotia abyssinica* L.F. Cass) through breeding and biotechnological tools” has been undertaken with the objectives to (1) characterize the complete set of niger genetic resources for major agronomic traits including autogamy, non-shattering, high harvest index traits, oil content and oil quality, (2) to develop a core set based on morphological, agronomic and molecular data, (3) genetic enhancement through pre-breeding, (4) development of homozygous lines using doubled haploid technology, and (5) development of genetic and genomic resources. The project is implemented in collaboration with seven cooperating centres including ICAR-NBPGR (New Delhi), PC Unit (Sesame & Niger, Jabalpur, MP), Zonal Agricultural Research Station, Igatpuri (Maharashtra), Niger Research Station (NRS), NAU, Vanarasi, (Gujarat), Regional Agricultural Research Station, Chintapalli (Andhra Pradesh), Dept. Plant Molecular Biology and Biotechnology, IGKV, Raipur, Chhattisgarh and CPMB, Osmania University, Hyderabad. The project has been sanctioned for a period of four years (2020-2024) with an outlay of Rs. 8,48,90,800.00 (Rupees Eight crore forty eight lakh ninety thousand eight hundred only).

(P. Kadirvel, M. Sujatha and A. Vishnuvardhan Reddy)

मानव संसाधन विकास / HUMAN RESOURCE DEVELOPMENT

Participation in Training Programmes / Workshops / Seminars / Conferences / Meetings etc.

Name	Programme	Venue	Date
Dr. M. Sujatha Dr. P. Kadirvel	Sub-Committee Meeting of APEX Board	Department of Biotechnology, New Delhi	10 January 2020
Dr. P. Kadirvel	Annual Progress Review Meeting of the programme Advisory Committee on OEB-Plant Sciences in connection with the DST-SERB sponsored project titled "Mapping of QTLs associated with resistance to aphid (<i>Uroleucon compositae</i> Theobald) in safflower (<i>Carthamus tinctorius</i> L.) using genome-wide SNP markers" (2017-2020).	INSA, New Delhi	21 January 2020
Dr. M. Santhalakshmi Prasad	Agri Tech South 2020 and Agri Vision 2020	PJTSAU, Hyderabad	22-24 February 2020

प्रकाशन / PUBLICATIONS

Journal

- Aziz Qureshi, A., Kadirvel, P., Mukta, N. and HariPriya, CH. V. 2020. Evaluation of safflower (*Carthamus tinctorius* L.) genotypes against salinity stress. *Journal of Oilseeds Research*, 37 (Special Issue):114-115.
- Baghyalakshmi, K., Shaik, M., Mohanrao, M.D., Shaw, R.K., Lavanya, C., Manjunatha, T. and Senthilvel, S. 2020. Development and characterization of tetraploid castor plants. *Plant Genetic Resources: Characterization and Utilization*, 18(2):98-104.
- Kadirvel, P., Praduman Yadav and Mukta, N. 2020. Development of breeding lines with high oil content in safflower using exotic germplasm sources. *Journal of Oilseeds Research*, 37 (Special Issue):8.
- Manjunatha, T., Lavanya, C., Santhalakshmi Prasad, M., Senthilvel, S., Prabakaran, A.J., Balakishan and A Vishnuvardhan Reddy, A. 2020. Development and evaluation of diverse wilt resistant monoecious lines in castor. *Journal of Oilseeds Research*, 37 (Special Issue):6-7.
- Meena, H.P., Sujatha, M., Pushpa, H.D. and Lal, J.J. 2020. Cytomorphological and molecular characterization of inter-specific hybrid between cultivated sunflower and *Helianthus argophyllus*. *Journal of Environmental Biology*, 41:66-72.
- Mohanrao, M.D. and Senthilvel, S. 2020. Linkage between stem colour and pigmentation in young leaves of castor. *Journal of Oilseeds Research*, 37 (Special Issue):7-8.
- Mukta, N., Praduman Yadav and Kadirvel, P. 2020. Variability for agro-morphological traits in safflower (*Carthamus tinctorius* L.) germplasm. *Journal of Oilseeds Research*, 37 (Special Issue):4-5.
- Nalini, N., Ramanjaneyulu, A.V., Mamatha, K., Neelima, T.L., Anuradha, G., Venkata Ramana, M., Suresh G. and Durga Rani, Ch. V. 2020. Best management practices for yield maximization in rainfed castor. *Journal of Oilseeds Research*, 37 (Special Issue):94.
- Prasindhu, K., Santha Lakshmi Prasad, M., Sarada Jayalakshmi Devi R. and Duraimurugan, P. 2020. Studies on transmission of sesame phyllody through different methods. *Journal of Oilseeds Research*, 37 (Special Issue):211-212.
- Prathap Reddy, K. and Sujatha, M. 2020. Inheritance and molecular mapping of powdery mildew (*Golovinomyces orontii*) resistance gene(s) in sunflower (*Helianthus annuus* L.) *3 Biotech*, 10-234.
- Pushpa, H. D., Yadava, D. K., Vasudev, S., Vinu, V., Behera, C. and Singh N. 2020. Identification of new molecular marker for low glucosinolates in Indian mustard. *Journal of Oilseeds Research*, 37 (Special Issue):41.
- Ramesh, K., Suresh, G., Aziz Qureshi, M.A., Ratnakumar, P., Praduman Yadav and HariPriya, Ch.V. 2020. Plant geometry and nitrogen effect on fatty acid composition of sesame (*Sesamum indicum* L.) seed. *Journal of Oilseeds Research*. 112.
- Santhalakshmi Prasad, M., Naresh, N., Sujatha, K., Usha, D., Sujatha, M., Sarada, C., Chander Rao, S. and Chowdappa, P. 2020. Population structure of *Alternaria* species causing leaf blight of sunflower (*Helianthus annuus* L.) in India. *Phytoparasitica* 48(3): 335-356.
- Santhalakshmi Prasad, M., Bharathi, E., Gayatri, B. and Prasad, R.D. 2020. Integrated management of castor wilt disease. *Journal of Oilseeds Research*, 37 (Special Issue): 201-202.
- Suresh, G. and Aziz Qureshi, M.A. 2020. Influence of conservation agricultural practices on performance of castor (*Ricinus communis* L.) based intercropping systems in shallow Alfisols under rainfed conditions. *Journal of Oilseeds Research*, 37 (Special Issue):109.

- Surya Prakash Reddy, M., Santha Lakshmi Prasad, M., Prasad, R.D. and Bhatt, J. 2020. Effect of different media, temperature, pH on the growth of *Macrophomina phaseolina* (Tassi) Goid causing root rot of sesame. *Journal of Oilseeds Research*, 37 (Special Issue): 210-211.
- Surya Prakash Reddy, M., Santha Lakshmi Prasad, M., Prasad, R.D. and Bhatt, J. 2020. Effect of different media, temperature, pH on the growth of *Macrophomina phaseolina* (Tassi) Goid causing root rot of sesame. *Journal of Oilseeds Research*, 37 (Special Issue): 210-211.
- Terzić, S., Boniface, M.C., Marek, L., Alvarez, D., Baumann, K., Gavrilova, V., Joita-Pacureanu, M., Sujatha, M., Valkova, D., Velasco, L., Hulke, B.S., Jocić, S., Langlade, N., Muñoz, S., Rieseberg, L., Seiler G. and Vear F. 2020. Gene banks for wild and cultivated sunflower genetic resources. *OCL-Oilseeds and fats, Crops and Lipids*, 27, 9.
- Venkataravana, P., Pushpa. H.D., Priyadarshini. S.K. and Dudagi S.V. 2020. Genetic variability, correlation and path analysis studies in segregating generation of three crosses for pod yield and its attributing characters in groundnut (*Arachis hypogaea* L.) *Journal of Pharmacognosy and Phytochemistry*, 9(1):771-776.

Technical Bulletin

- Anjani, A. 2020. Sudhakara Babu, S.N., Padmavathi, P., Srinivas, P.S., Prasad, R.D. and Vishnuvardhan Reddy, A. 2020. **Hybrid seed Production in safflower**. ICAR – Indian Institute of Oilseeds Research, Hyderabad.
- ICAR-IIOR 2020. **Handbook on ICAR-IIOR Technologies 2009-2019**. (Eds.) A. Vishnuvardhan Reddy, P. Kadirvel, M. Sujatha, C. Lavanya, N. Mukta, S.N. Sudhakara Babu, G. Suresh, P. Padmavathi, R.D. Prasad, M. Santha Lakshmi Prasad, P.S. Srinivas, P. Duraimurugan, Lakshmi Prayaga. ICAR-Indian Institute of Oilseeds Research, Rajendranagar, Hyderabad. pp.42.
- Jawaharlal, J., Sudhakara Babu, S.N., Duraimurugan, P., Santhalakshmi Prasad, M., Ramya, K.T., Rajani Bisen, Sujatha, M. and Vishnuvardhan Reddy, A. 2020. **Guidelines for quality seed production of sesame**. ICAR – Indian Institute of Oilseeds Research, Hyderabad.
- Manjunatha, T., Lavanya, C., Mukta, N. and Vishnuvardhan Reddy A. 2020. **Varieties and hybrids of castor (*Ricinus communis* L.)**. ICAR-Indian Institute of Oilseeds Research, Hyderabad. pp.85.
- Mukta, N., Anjani, K. and Vishnuvardhan Reddy, A. 2020. **Varieties and hybrids of Safflower (*Carthamus tinctorius* L.)**. ICAR-Indian Institute of Oilseeds Research, Rajendranagar, Hyderabad pp.57.
- Suresh, G., Lavanya, C., Duraimurugan, P., Santha Lakshmi Prasad, M., Manjunatha. T., Lakshmi Prayaga, Jawahar Lal J. and Vishnuvardhan Reddy, A. 2020. **Castor: package of practices for increasing production**. 7th revised edition. ICAR-Indian Institute of Oilseeds Research, Hyderabad. p.25.

Extension Folders

- Anjani, A., Sudhakara Babu, S.N., Padmavathi, P., Srinivas, P.S., Prasad, R.D. and Vishnuvardhan Reddy, A. 2020. **Hybrid seed production in safflower**. ICAR–IIOR Extension Folder-23.
- Ramya, K.T., Jawaharlal, J., Sudhakara Babu, S.N. and Vishnuvardhan Reddy, A. 2020. **Technology for quality seed production in sesame**. IIOR Extension Folder-26.

Popular Articles

- Pushpa H. D., Usha Kiran, B. and Jawahar Lal, J. 2020. *Veri nuvul – Yajamanyapadatilu* (Telugu), Agrilclinic, February, 2020.
- Pushpa H. D. and Kumarswamy H.H. 2020. *Bara parstityallu baruva bele-Gurellu* (Kannada). Krishi Pradepeke.
- Pushpa H. D., Meena H. P., Usha Kiran, B. and Kumarswamy H.H. 2020. *Ramtil ek gunkari phasal* (Hindi), Krishisewa, April, 2020. p. 11-13.

अवार्ड / AWARDS

- Best poster award to Manjunatha, T., Lavanya, C., Santha Lakshmi Prasad, M., Senthilvel, C., Prabhakaran, A.J., Balakishan, G. and Vishnuvardhan Reddy, A. 2020. **Development and evaluation of diverse wilt resistant monoecious lines in castor**. In: National Seminar on “Technological Innovations in Oilseed Crops for Enhanced Productivity, Profitability and Nutritional Security” organised by Indian Society of Oilseeds Research and ICAR-Indian Institute of Oilseeds Research, Hyderabad from 7-8 February, 2020 at Hyderabad.
- Best poster award to Prasadindu, K., Santha Lakshmi Prasad, M., Sarada Jayalakshmi Devi, R. and Duraimurugan, P. 2020. **Studies on transmission of sesame phyllody through different methods**. In: National Seminar on “Technological Innovations in Oilseed Crops for Enhanced Productivity, Profitability and Nutritional Security” organised by Indian Society of Oilseeds Research and ICAR-Indian Institute of Oilseeds Research, Hyderabad from 7-8 February, 2020 at Hyderabad.
- Best poster award to Sudhakara Babu, S.N., Leelavathi, M., Balakishan, G., Prabhakar Rao, N. and Vishnuvardhan Reddy, A. 2020. **Seed setting and filling under pollination with stored pollen in sunflower**. In: National Seminar on “Technological Innovations in Oilseed Crops for Enhanced Productivity, Profitability and Nutritional Security” organised by Indian Society of Oilseeds Research and ICAR-Indian Institute of Oilseeds Research, Hyderabad from 7-8 February, 2020 at Hyderabad.

सम्मान / RECOGNITIONS

- Dr. H.H. Kumaraswamy, Scientist (Biotechnology) was awarded the “**Fellow of Indian Society of Oilseeds Research**”, ICAR-IIOR, Hyderabad.

- Dr. M. Santha Lakshmi Prasad, Principal Scientist (Plant Pathology) was awarded the “Fellow of Indian Phytopathological Society” (FPSI-2018) for the year 2018-19.
- Dr. G. Suresh, Principal Scientist (Agronomy) delivered a talk on “Preparedness for oilseed cultivation during Kharif-2020” in T-News channel on 11 June 2020.

सेवा निवृत्त / RETIREMENTS

- Shri Surender Prasad, Technical Officer retired from ICAR-IOR services on superannuation on 31 May 2020.
- Shri G.Y. Prabhakar, Technical Officer retired from ICAR-IOR services on superannuation on 30 June 2020.

हिन्दी गतिविधियाँ / HINDI ACTIVITIES

संस्थान में राजभाषा कार्यशाला आयोजित

नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति-2 के तत्वावधान में तिलहन अनुसंधान संस्थान, राजेंद्रनगर में एक कार्यशाला का आयोजन 27.2.20 को नराकास -2 के सदस्य कार्यालयों के अधिकारियों व अन्य स्टॉफ सदस्यों के लिए किया गया।

डॉ. एस. के. सोम, संयुक्त निदेशक, नार्म ने कार्यक्रम की अध्यक्षता की तथा अपने संबोधन में इस तरह नियमित रूप से कार्यशाला आयोजन से हिन्दी में सरकारी काम-काज में अपार वृद्धि होने की संभावना है। इसका असर भी दिखाई दे रहा है।

श्री. शीतांशु कुमार, वरिष्ठ प्रशासनिक अधिकारी, आईआईओआर ने सहभागियों का स्वागत करते हुए बताया कि किस तरह आईआईओआर के विभिन्न अनुभागों में हिन्दी कार्य में वृद्धि हुई है तथा वित्त एवं लेखा अनुभाग तो लक्ष्य से काफी आगे बढ़ कर कार्य कर रहा है तथा अन्य अनुभागों को उनका अनुसरण करना चाहिए। इसके साथ ही कार्यक्रम का उद्देश्य एवं कार्यक्रम की जानकारी भी दी। श्रीमती अनिता पांडे, सदस्य-सचिव, नराकास ने हिन्दी शिक्षण योजना हैदराबाद द्वारा चलाए जा रहे कंप्यूटर पर हिन्दी में काम करने हेतु चलाए जा रहे पांच दिवसीय कार्यक्रमों में सभी कार्यालयों से सदस्यों को नामित करने का अनुरोध किया। श्रीमती आकांक्षा शुक्ला, एसोसिएट प्रोफेसर एवं प्रभारी राजभाषा, एनआईआरडी ने इस प्रकार के आयोजन के महत्व को बताते हुए प्लास्टिक मुक्त कार्यालय परिसर की ओर काम करने की बात कही।

कार्यक्रम के दूसरे तकनीकी सत्र में डॉ. प्रद्युम्न यादव, वरिष्ठ वैज्ञानिक आईआईओआर ने खाद्य तेल एवं उनसे जुड़ी भ्रांतियों पर अपना प्रस्तुतीकरण दिया। उन्होंने खाद्य तेलों से जुड़े बहुत से मिथकों पर प्रकाश डाला तथा सहभागियों की शंकाओं का निराकरण भी किया।

श्री. रंगा साई, सहायक महा प्रबंधक, एसबीआई, हैदराबाद ने कंप्यूटर में हिन्दी में काम करने की अद्यतन तकनीक पर प्रस्तुतीकरण दिया। आपने विभिन्न ऑन लाइन अनुवाद की सुविधाओं के बारे में तथा वाईस टाईपिंग का विस्तृत विवरण दिया। इनसे जुड़ी सहभागियों की समस्या एवं जिज्ञासा का भी निवारण किया। सहभागियों ने इस जानकारी को अत्यंत उपयोगी बताया।

श्री. प्रदीप सिंह, सहायक निदेशक (राजभाषा) आईआईओआर के धन्यवाद प्रस्ताव से कार्यशाला का समापन हुआ।



Editors : Dr. P. Kadirvel, Dr. Md. A. Aziz Qureshi,
Shri Pradeep Singh & Dr. H.P. Meena

Compiled by : Shri V. Sambasiva Rao

Published by : Dr. A. Vishnuvardhan Reddy, Director
on behalf of the
ICAR-Indian Institute of Oilseeds Research,
Rajendranagar, Hyderabad-500 030
Web site: <http://www.icar-ior.org.in>
E-mail: director.ior@icar.gov.in
Fax: (+91) 040-24017969
Phone: (+91) 040-24015222

Printed Matter / Book - Post



हर कदम, हर डगर
किसानों का हमसफर
भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद

AgriSearch with a human touch